25

अपनी प्रधानाध्यापिका को मेरी श्रद्धांजलि

कल्याणी राजारमन



कभी–कभी मेरा मन भटकता हुआ बीते समय में जा पहुँचता है और मेरे शानदार स्कूल की आनन्द भरी स्मृतियाँ मेरे लिए ताजा हो जाती हैं। लेडी शिवस्वामी अय्यर गर्ल्स हायर सैकेण्डरी स्कूल, माइलापुर, चेन्नई में मैंने छठी से बारहवीं कक्षा तक की पढ़ाई की। इस स्कूल का नेतृत्व एक प्रेरणादायी प्रधानाध्यपिका करती थीं। स्कूल का एक सामान्य दिन, खेल–दिवस, प्रदर्शनियाँ, सेवा–संगम गतिविधियाँ, मध्यान्ह भोजन, चिकित्सा शिविर, स्कूल का वार्षिक–दिवस, प्रतिस्पर्धाएँ, समर्पित शिक्षक और इन सबकी यादों से बढ़कर मेरी प्रधानाध्यापिका सत्यभामा जी की यादें हैं।

मेरे लिए मेरी प्रधानाध्यापिका बहुत खास थीं। हमें उनकी कक्षाओं की जबरदस्त चाह रहती थी। जब मैं दसवीं में थी, तो उन्होंने हमें एक अँग्रेजी कविता पढ़ाई। वे उस साल केवल दो बार हमारी कक्षा में आई थीं और सिर्फ एक कविता पूरी कर सकी थीं। उनके द्वारा ली गई दोनों कक्षाएँ बहुत जीवन्त थीं। उन्होंने हमें व्यावहारिक उदाहरण देते हुए प्रत्येक शब्द का अर्थ समझाया। मुझे अभी भी याद है कि किस तरह उन्होंने हमें 'चाइल्डिश' (बचकाना) और 'चाइल्ड–लाइक' (बाल जैसा) के बीच का अन्तर समझाया था और हमसे पूछा था कि हम क्या कहलाना पसन्द करेंगे – चाइल्डिश या चाइल्ड–लाइक? वह कक्षा 40 मिनट से अधिक समय के लिए चली थी। पूरे बरामदे में खामोशी थी। प्रधानाध्यापिका दोपहर के भोजन का समय हो जाने के बाद भी क्लास ले रही थीं, लेकिन किसी ने शोर मचाने का दुस्साहस नहीं किया था। सन्नाटे का कारण डर नहीं, बल्कि प्रधानाध्यापिका के प्रति सम्मान था।

प्रत्येक सोमवार, हमारे यहाँ झण्डा फहराने का कार्यक्रम हुआ करता था और प्रत्येक कक्षा बारी–बारी से राष्ट्रीय ध्वज फहराती थी। एक सोमवार, हमारी कक्षा की बारी थी और हम राष्ट्रगान गाते वक्त गलतियाँ कर गए। बड़ी शिष्टता के साथ उन्होंने हमें रोका, अर्थ समझाया, और प्रेरित किया कि हम फिर से जोश के साथ बिना गलती किए गाएँ।

उन दिनों हमारे स्कूल में कोई शारीरिक दण्ड नहीं दिया जाता था। हमें नैतिक विज्ञान (मॉरल साइंस) की कक्षा में सुन्दर कहानियों के माध्यम से नैतिक मूल्य पढ़ाए जाते थे। हमारे स्कूल में ब्लू क्रॉस, रेड क्रॉस और सेवा–संगम की इकाइयाँ थीं और ये सब बच्चों को आगे आने वाले जीवन के लिए अलग–अलग ढंग से तैयार करती थीं।

उनका खुशनुमा, मुस्कुराता चेहरा, साफ–सुथरी सूती साड़ी और उनकी सादगी आज भी मुझे प्रेरित करते हैं! मैंने उन्हें अधिकांश समय सिटी बस से यात्रा करते देखा है। मुझे यह कहते हुए बड़ा गर्व हो रहा है कि मेरे सभी मित्रों ने हमारे शानदार स्कूल तथा अद्‌भुत प्रधानाध्यापिका की वजह से अपने जीवन में अच्छा मुकाम हासिल कर लिया है। मुझे नहीं लगता कि मैंने आज तक अपने जीवन में इतना बेहतरीन इन्सान और इतनी प्रेरणादायी शिक्षिका देखी है।

ये यादें मेरे मन में उसी आनन्द का भाव जगाती हैं जिसका चित्रण विलियम वर्डस्वर्थ ने अपनी कविता 'डैफोडिल्स' में किया है:

अकसर जब शून्य

या मनन की मुद्रा में,

मैं अपने पलंग पर होता हूँ,

इक पल को उनकी वही चमक

मन–दृष्टि पर छा जाती है,

और यही एकान्त का परमआनन्द है;

तब मेरा हृदय सुख से भर जाता है,

डैफोडिल फूलों के साथ।

वह नृत्य करने लगता है।

सम्पादकीय टिप्पणी

यह लेख लेडी शिवस्वामी अय्यर गर्ल्स हायर सैकेण्डरी स्कूल, माइलापुर, चेन्नई की प्राचार्य श्रीमती सत्यभामा के सम्मान में लिखा गया है। लेखिका उनकी विद्यार्थी थीं।